पुण्य प्रसून के खुलासों से डरी मोदी सरकार, 9 बजते ही एबीपी चैनल दिखना हुआ बंद

स्वतंत्र कुमार की रिपोर्ट

जनज्वार, दिल्ली क्या कोई सरकार वो भी मोदी जैसी ताकतवर सरकार इतना डर सकती है कि किसी समाचार चैनल की खबर को रोकने के लिये घर—घर टीवी कनेक्शन पहुंचाने वाली कंपनियों के नेटवर्क ही खराब कर दे। जी, हां ऐसा ही हो रहा है। आज बुधवार की रात को जैसे ही एबीपी न्यूज पर वरिष्ठ पत्रकार पुण्य प्रसून वाजपेयी अपना शो मास्टर स्ट्रोक लेकर आये, उसी समय एबीपी न्यूज टीवी स्क्रीन से गायब होने लगा।

ऐसा होते ही कुछ देर तक दर्शकों ने इंतजार किया, लेकिन जब बार बार ऐसा होने लगा तो लोगों ने एबीपी चैनल बदल कर दूसरा चैनल देखने लगे और सरकार अपने दाव में कामयाब हो गई।

इसके बाद सोशल मीडिया पर कई पत्रकारों ने लिखना शुरू किया तो एक के बाद एक ये सिलसिला शुरू हो गया और आम जनता भी शिकायत करने लगी कि उनके यहां लगे एयरटेल, डेन, टाटा स्काई आदि के नेटवर्क में गड़बड़ी होने लगी और सबको चैनल बदलना पढ़ा।

इसके बाद तस्वीर साफ हुई तो पता चला गुरुवार को प्रधानमंत्री यूपी के सीतापुर के उन लाभार्थियों से बात करेंगे, जिन्हें निशुल्क बिजली के कनेक्शन मिले हैं।

इसी विषय पर पुण्य प्रसून ने बुधवार को खबर दिखा दी कि कैसे लोगों को जिनके पास पेट भरने के पैसे नहीं हैं, उन्हें जबरदस्ती बिजली के कनेक्शन दिए गए हैं। और आज ही अधिकारी वहां डेरा जमा कर बैठे हैं, ताकि कोई गड़बडी न हों और लाभार्थी वही बोलें जो उन्हें समझाया पढ़ाया जाए।

आरोप यह है कि यह खबर आम जनता तक न पहुंचे, इसलिए एबीपी चैनल के सिग्नल में गड़बड़ी कर दी गई। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने तो सीधे ट्वीट कर मोदी पर हमला बोला और कहा कि मोदी जी आप पुण्य प्रसून से इतना डर गए हैं।

अरविंद केजरीवाल ने मोदी को निशाने पर लेते हुए अपने ट्वीटर हैंडल से ट्वीट किया, 'मोदी जी, ये क्या करवा रहे हैं? ये तो ठीक नहीं है। पुण्य प्रसून से इतना डर?'

मूर्खता और क्रूरता की पराकाष्ठा

हिमांशु कुमार

पढ़ रहा था कि मध्य प्रदेश सरकार अब सरकारी अस्पतालों में डाक्टरों के साथ ज्योतिषियों को भी बैठाएगी जो व्यक्ति के स्वस्थ होने या उसके कर्मों के कारण उसके बीमार होने या दुर्घटनाग्रस्त होने के बारे में अपने ज्योतिष के हिसाब से बताएँगे, यह मूर्खता की पराकाष्ठा है। दूसरी खबर यह है कि सरस्वती शिशु मन्दिरों को सरकार चलायेगी और उनके शिक्षकों को अब सरकार तनख्वाह देगी।

सरस्वती शिशु मन्दिर मुसलमानों और ईसाईयों के खिलाफ नफरत फ़ैलाने के लिए मशहूर हैं, इसका मतलब है अब नागरिकों के खिलाफ नफरत फ़ैलाने का काम भाजपा सरकार खुद करेगी, अगर ऐसा होता है तो भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ हिन्दुओं के सबसे बड़े दुश्मन साबित होंगे.

जिन हिन्दुओं को दुनिया के तर्क और ज्ञान के साथ खुद को सुधारते हुए अपने पूरे समुदाय को अंधविश्वासों, जातिवाद की क्रूरताओं, महिलाओं के पर्दाप्रथा, धर्म के नाम पर फ़ैली हुई झूठी कहानियों, से आज़ाद करना था, उन हिन्दुओं को कूढ़मगज, क्रूर और दंगाई बनाया जा रहा है।

भारत में हिन्दू शब्द आने से भी पहले सैंकड़ों ज्ञान की धाराएँ मौजूद थीं, यहाँ वैदिक दर्शन था तो सांख्य दर्शन भी था जो ईश्वर के अस्तित्व को ही नहीं मानता। जैन, बौद्ध दर्शन थे और आदिवासी थे जो ईश्वर को नहीं मानते थे।

यहाँ धर्म को ज्ञान और सच की खोज कहा गया, कभी नहीं कहा गया कि अभी तक जो ज्ञान खोज लिया गया है वही अंतिम सत्य है और अब आपको उसे आँखें मूँद कर मान लेना चाहिए।

बल्कि किसी विषय में अपनी बात कहने के बाद निष्कर्ष कहने के बाद कहा जाता था कि नेति नेति मतलब यह भी नहीं है, लेकिन आज राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और उसके गिरोह द्वारा हिन्दुओं को उनकी इस विशेषता के विरुद्ध जबरदस्ती आतंक के दम पर पुरानी लकीर पर चलने के लिए मजबूर किया जा रहा है।

जिसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जिसे हिन्दू कह रहा है उसकी परिभाषा क्या है ? क्या राम कृष्ण को मानने वाले, मूर्ति पूजा करने वाले, ईश्वर को मानने वाले, गाय को माता मानने वाले, ही हिन्दू हैं ?

तो फिर वेद के मन्त्रों के रचयिता चार्वाक क्या हिन्दू नहीं हैं जो ईश्वर को, आत्मा को या पुनर्जन्म को ही नहीं मानते, क्या सांख्य दर्शन लिखने वाले ऋषि कपिल हिन्दू नहीं हैं जो ईश्वर को नहीं मानते?

फिर तो महावीर, बुद्ध, आपके हिंदू की परिभाषा के बाहर हो जाते हैं, क्योंकि दोनों ही ना तो राम कृष्ण को मानते हैं ना ही ईश्वर को मानते हैं, इसी तरह नानक भी आपके हिन्दू धर्म से बाहर हो जाते हैं क्योंकि वह भी मूर्ति पूजा को नहीं मानते।

इसी तरह आर्य समाज भी मूर्ति पूजा और अवतारवाद का विरोध करता है, आर्य समाज राम कृष्ण को अवतार नहीं मानता, तो इसका मतलब आर्य समाज भी हिन्दू नहीं है, तो फिर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ किसे हिन्दू कह रहा है ?

क्या हिन्दू का मतलब अब यह हो गया है कि जो भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का गुलाम है और उसकी मूर्खता के सामने सर झुका दे, जो भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कहने से मुसलमानों को गालियाँ बके और अयोध्या में विश्व हिन्दू परिषद् के मन्दिर के नाटकबाजी में शामिल हो जाए वही हिन्दू माना जाएगा ? और जो भारत की सनातन रीति से सोचेगा और ज्ञान को नई खोज जारी रखेगा और अपना दिमाग खुला रखेगा, उसे भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ हिन्दू होने से बाहर कर देंगी?

कान खोल कर सुन लो मैं अपने बच्चों को मूर्ख नहीं बनाऊंगा, इसलिए मैं उन्हें नहीं सिखाऊंगा कि कोई भगवान् या देवता तुम्हारे सारे काम बना देता है। मैं उन्हें बताऊँगा कि पहाड़ पर बर्फ टपकने से बना हुआ ढेर भगवान नहीं होता।

मैं उन्हें बताऊंगा कि भारत में ज्ञान की कितनी धाराएं थीं और उन्होंने कितनी सुंदर विचारधाराएँ दी हैं। मैं उन्हें बताऊंगा कि वेद में राम कृष्ण नहीं हैं। मैं अपने बच्चों को मूर्ख नहीं बनने दूंगा।

मैं उन्हें बताऊंगा कि मुसलमान ईसाई उनके दुश्मन नहीं हैं बल्कि एक लोकतान्त्रिक देश के साथी नागरिक हैं, मैं अपने बच्चों को बताऊंगा कि पाकिस्तान दुश्मन देश नहीं पड़ोसी देश है जिसके साथ हमें दोस्ती से ही रहना पड़ेगा।

मैं अपने बच्चों को कोई भी अंध विश्वास मानने से रोकूंगा। छींकना, बिल्ली का रास्ता काटना, भूत प्रेत, कन्यादान, सती, जातिवाद, पर्दा, ईश्वरवाद, अवतारवाद, आदि के बारे में मैं उनके सामने सारी सच्चाई रख दूंगा।

भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जिस भीड़ को तैयार कर रहे हैं वह हर धर्म के खिलाफ है, वह ज्ञान और प्रगति की दुश्मन है, तर्क और समझदारी की दुश्मन है।

भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा तैयार भीड़ चुनाव जिता सकती है, दंगे कर सकती है, रोज़गार और बराबरी भूल कर धर्म के नशे में सोती रह सकती है। लेकिन इस भीड़ से प्रगति, बुद्धि का विकास, विज्ञान की प्रगति कभी नहीं होगी, और अगर भारत के बहुसंख्यकों को भाजपा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ मूर्ख और क्रूर बना देगी तो इस देश का भविष्य क्या होगा यह आप खुद सोच लीजिये।

खबर (दार) झरोखा | **विकास नारायण राय**

एससी/एसटी एक्ट की तरह बने 'संविधान लिंचिंग' के खिलाफ़ सख्त क़ानून !

भगवा गुंडों की संविधान लिंचिंग के निशाने पर गौ रक्षक भगवा सन्यासी 80 वर्षीय अग्निवेश भी आ गये। फ्रांसीसी क्रांति के दौर में गिलोटिन के आविष्कारक का सिर भी गिलोटिन से ही कटा था। भाजपा शासित राज्य झारखण्डके पाकुड़ में पहाड़िया आदिवासी कार्यक्रम में भाग लेने गये, स्वामी दयानंदकी विरासत के कट्टर अनुयायी इस खांटी आर्यसमाजी को संघी लिंचमॉब ने इस लिए बुरी तरह पीटा कि उन्होंने हिन्दू धार्मिक पाखंड और अन्धविश्वास पर दयानंद सरीखी टिप्पणी की थीं।

अग्निवेश एक ऐसे राजनीतिक हमले का शिकार बने जिसका स्रोत अंबेडकर के बताये संवैधानिक विरोधाभास में निहित है। अन्यथा, मोदी के प्रधानमन्त्री बनने पर उन्होंने बधाई का पत्र भेजा था और नीतीश कुमार के बिहार में भाजपा संग जाने के बावजूद वे नशाबंदी पर उनका समर्थन जताते रहे थे। अंबेडकर की तर्ज पर अग्निवेश भी अंतरजातीय विवाह को बढावा देकर जाति प्रथा से व्यवहारिक स्तर पर लड़ने के समर्थक रहे हैं।

अंबेडकर ने संविधान सभा में जैसा चेताया था, हमारे राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक जीवन के बीच के विरोधाभास उलझते जा रहे हैं। उन्होंने कहा था, 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू होने पर 'राजनीति में समानता होगी और सामाजिक व आर्थिक जीवन में असमानता। राजनीति में हम एक व्यक्ति एक वोट और एक वोट एक मूल्य का सिद्धांत स्वीकार रहे हैं। सामाजिक और आर्थिक जीवन में हम एक व्यक्ति एक मूल्य के सिद्धांत को अस्वीकार करना जारी रखेंगे। हम कब तक यह विरोधाभासी जीवन जीते रहेंगे? हम कब तक सामाजिक और आर्थिक जीवन में समानता को अस्वीकृत करते रहेंगे? यदि हम लम्बे समय तक इसे अस्वीकार करते रहे, तो ऐसा अपने राजनीतिक लोकतंत्र को खतरे में डाल कर ही करेंगे।'

स्वामी अग्निवेश पर भगवा भीड़ का हमला जिस एक सवाल पर केन्द्रित हो जाना चाहिए, वह है- क्या यह संविधान भी बचेगा? सुप्रीम कोर्ट ने मॉब लिंचिंग की अनेकों घटनाओं के सन्दर्भ में ताजातरीन निर्देश में कहा है कि वे भीड़ तंत्र को देश रौंदने नहीं दे सकते। उसका यही मतलब निकलेगा कि निदान के मौजूदा तौर-तरीके, यानी हाई कोर्ट-सुप्रीम कोर्ट में रिट दायर करना, अभिव्यक्ति के संवैधानिक अधिकारों की रक्षा में अप्रभावी सिद्ध हो रहे हैं।

संविधान लिंचिंग गली-मोहल्लों-गावों-कस्बों में होने लगी है तो उसके निदान भी सहज उपलब्ध हो। दरअसल लम्बे अरसे से जरूरत मुंह बाए खड़ी है कि संविधान की रक्षा के लिए कोई सख्त कानून बने जो भगवा या शरिया जैसी धार्मिक राजनीति के शिकार सामान्य पीड़ित को सहज निदान भी उपलब्ध करा सके। मसलन, 'प्रोटेक्शन ऑफ सिटीजन फ्रॉम वायलेशन ऑकान्सटीट्यूशन एक्ट।' वैसे ही जैसे दलित और आदिवासी सन्दर्भ में कड़ा कानून बना हुआ है -प्रेवेंशन ऑफ अट्रोसिटी अगेंस्ट शेड्यूलकास्ट एंड शेड्यूल ट्राइब एक्ट।

गत वर्षों में संविधान की कई लोकतांत्रिक अवधारणायें स्वयं 'लिंचिंग' का शिकार हो चुकी हैं।इनमें शासन के तीन अंगों- विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका- की परस्पर स्वतंत्रता की मूलभूत अवधारणा भी शामिल है। कार्यपालिका की मनमानी ने विधायिका को तो अनुपालक बना ही दिया है,अपने ऊपर न्यायपालिका के अंकुश को भी एक हद तक भोंथरा कर छोड़ा है।

यहाँ तक कि,अरसे से स्वयं सुप्रीम कोर्ट की भी लोकतांत्रिक पकड़ संदेह के घेरे में नजर आ रही है। मोदी सरकार बनने पर दिल्ली पटियाला हाउस अदालत परिसर में भगवा पाले के वकीलों के 'लिंचिंग मॉब' हमले का कन्हैया कुमार प्रकरण सारे देश ने टीवी पर देखा था। उत्तेजित सुप्रीम कोर्ट ने उसी दिन सीनियर वकीलों की टीम भेज कर रिपोर्ट भी मंगाई पर आगे दोषियों पर कार्यवाही का चरण टांय-टांय फिस्स ही रहा। आज भी वे अन्धविश्वासी-अफवाही-आपराधिक मॉब लिंचिंग को लेकर क्रियाशील हुए हैं जबकि राजनीतिक मॉब लिंचिंग और उसकी पूरक मीडिया लिंचिंग पर उनकी प्राय: निष्क्रियता या बेहद धीमी सुनवाई की प्रकृति को तोड़ने की जरूरत है।

वस्तुस्थिति यह है कि अंबेडकर ने 'एक वोट एक वैल्यू' की राजनीतिक समानता की संवैधानिक अवधारणा में जो आस्था प्रकट की थी,आज उसका भी अस्तित्व खतरे में है। जातिगत आरक्षण और सोशल सिक्योरिटी के सेफ्टी वाल्व तक बेहद दबाव में हैं। ऐसा हुआ है मुख्यत: कॉर्पोरेट धनतंत्र के लंबे समय से चले आ रहे प्रभाव में,और फिलहाल साम्प्रदायिक धर्मतंत्र के आक्रामक दखल के चलते। यानी असमानता के आर्थिक और सामाजिक विरोधाभास भारत में राजनीतिक लोकतंत्र को उसी खतरे में धकेल रहे हैं जिसे संविधान के अनावरण के साथ अंबेडकर ने रेखांकित किया था।

मोदी सरकार के सत्ता में आने के साथ,जेएनयू पर अंधाधुंध संघी हमलों ने समाज को रोहित वेमुला और कन्हैया कुमार के रूप में युवा प्रगतिशील हीरो दिए। दाभोलकर,पानसरे,कलबुर्गी और गौरी लंकेश की शहादत ने यह भी रेखांकित किया है कि संवैधानिक लिंचिंग किसी सीमा को स्वीकार नहीं करती। साम्प्रदायिक लिंचिंग अंतहीन सिलसिला लगने लगी है। स्वामी अग्निवेश के भीतर आज भी बंधुआ मुक्ति दौर का प्रगतिशील हीरो जी रहा है,इस बार के संघी हमले ने उसे संजीवनी भी दी है। मेरी कामना है यह हीरो समाज में नयी ऊर्जा से अपनी भूमिका निभाए।

अग्निवेश पर हमला- कुछ तो मुंह खोलें

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

स्वामी अग्निवेशजी के साथ झारखंड के एक जिले में भीड़ ने जो व्यवहार किया है, वह इतना शर्मनाक और वहशियाना है कि उसकी भर्त्सना के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। एक संन्यासी पर आप जानलेवा हमला कर रहे हैं और 'जय श्रीराम' का नारा लगा रहे हैं। आप श्री राम को शर्मिंदा कर रहे हैं। आपको राम देख लेते तो अपना माथा ठोक लेते। आप खुद को रावण की औलाद सिद्ध कर रहे हैं। आप अपने आपको हिंदुत्व का सिपाही कहते हैं। अपने आचरण से आप हिंदुत्व को बदनाम कर रहे हैं। क्या हिंदुत्व का अर्थ कायरपन है ?

इससे बढ़कर कायरता क्या होगी कि एक 80 साल के निहत्थे संन्यासी पर कोई भीड़ टूट पड़े ? उसे डंडे और पत्थरों से मारे ? उसके कपड़े फाड़ डाले, उसकी पगड़ी खोल दे, उसे जमीन पर पटक दे ? स्वामी अग्निवेश पिछले 50 साल से मेरे अभिन्न मित्र हैं, संन्यासी बनने के पहले से ! वे तेलुगुभाषी परिवार की संतान हैं और हिंदी के कट्टर समर्थक हैं। महर्षि दयानंद के वे अनन्य भक्त हैं और कट्टर आर्यसमाजी हैं। वे संन्यास लेने के पहले कलकत्ते में प्रोफेसर थे। वे एक अत्यंत सम्पन्न और सुशिक्षित परिवार के बेटे होने के बावजूद संन्यासी बने। उन्हें पाकिस्तान का एजेंट कहना कितनी बड़ी मूर्खता है। उन्हें गोमांस-भक्षण का समर्थक कहना किसी पाप से कम नहीं है। उन्होंने और मैंने हजारों आदिवासियों, ईसाइयों और मुसलमानों मित्रों का मांसाहार छुड़वाया है। उन्हें ईसाई मिश्नरियों का एजेंट कहनेवालों को पता नहीं है कि अकेले आर्यसमाज ने इन धर्मांध विदेशी मिश्नरियों को भारत से खदेड़ा है।

अग्निवेशजी पर हमला करने के पहले उन पर ये सब आरोप लगाना पहले दर्जे की धूर्तता है। अग्निवेशजी ने जिस शिष्टता से उन हमलावर प्रदर्शनकारियों को अंदर बुलाया, उसका जैसा जवाब उन्होंने दिया है, वह जंगली जानवरपन से कम नहीं है। स्वामी अग्निवेशजी के कुछ विचारों और कामों से मैं भी सहमत नहीं होता हूं। उनकी आलोचना भी करता हूं। लेकिन उनके साथ इस तरह का जानवरपन करने का अधिकार किसी को भी नहीं है। ये हमलावर यदि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा से संबंधित हैं तो मैं मोहन भागवतजी और अमित शाह से कहूंगा कि वे इन्हें तुरंत अपने संगठनों से निकाल बाहर करें और इन्हें कठोरतम सजा दिलवाएं। इस तरह के लोगों के खिलाफ कठोर कानून बनाने की सलाह कल ही सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार को दी है लेकिन सरकार का हाल किसे पता नहीं हैं। वह किंकर्तव्यविमूढ़ है। उसे पता ही नहीं है कि उसे क्या करना चाहिए। देश में भीड़ द्वारा हत्या की कितनी घटनाएं हो रही हैं लेकिन दिन-रात भाषण झाड़नेवाले हमारे प्रचारमंत्रीजी इस मुद्दे पर अपना मुंह खोलने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाते। यदि सर संघचालक मोहन भागवत भी चुप रहेंगे तो राष्ट्रवाद और हिंदुत्व के बारे में जो शशि थरुर ने कहा है, वह सच होने में देर नहीं लगेगी।